PK टाइम्स

लोक टुडे

विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 317 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | मंगलवार 02 जून 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

पृथ्वीराज नगर उत्तर-दक्षिण, नारायण विहार व टोडरा में खुलेंगे 4 नए एईएन कार्यालय

लोक टूडे। जयपुर

जयपुर शहर में तेजी से विकसित हो रहे पृथ्वीराज नगर उत्तर-दक्षिण, नारायण विहार तथा सवाई माधोपुर के टोडरा में विद्युत उपभोक्ताओं को जल्द ही बेहतर विद्युत सेवाएं मिलेंगी। राज्य सरकार ने जयपुर विद्युत वितरण निगम में चार नए सहायक अभियन्ता कार्यालय के सृजन के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। इनके लिए सहायक अभियन्ता के चार नए पद सृजित करने की भी मंजूरी दी गई है। इससे जयपुर में तेजी से विकसित हो रहे इलाकों में विद्युत तंत्र को मजबूती मिलेगी एवं उपभोक्ताओं की समस्याओं का त्वरित समाधान भी हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि बजट 2026-27 के सामान्य वाद-विवाद तथा वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा के दौरान इन कार्यालयों को खोलने की घोषणा की गई थी। इसकी अनुपालना में वित्त विभाग ने यह मंजूरी दी है। जयपुर डिस्कॉम की ओर से इन कार्यालयों को खोलने के आदेश जारी किए जा चुके हैं।

नवसृजित नारायण विहार तथा पीआरएन (उत्तर) विद्युत सब डिवीजन को जयपुर नगर वृत्त (उत्तर) सर्किल के सीडी (प्रथम) खंड तथा नवसृजित पीआरएन (दक्षिण) सहायक अभियंता कार्यालय को जयपुर नगर वृत्त दक्षिण के खंड सीडी-6 के क्षेत्राधिकार में रखा गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का दृष्टिकोण है कि उपभोक्ताओं को उनके नजदीक ही सेवाएं मिल सकें। इसी क्रम में ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर की पहल पर विगत ढाई वर्षों में जयपुर डिस्कॉम में पत्रकार कॉलोनी, शिकारपुरा, मुहाना मण्डी, एनआरआई, शालीमार चौराहा (जयपुर), माधोराजपुरा (चाकसू), रीको रानपुर एवं खातोली (कोटा) में नए ओएण्डएम सब डिवीजन कार्यालय और सीतापुरा में नवीन एचटीएम सहायक अभियन्ता कार्यालय खोले गए हैं। इसके अतिरिक्त सीतापुरा (जयपुर) तथा कठूमर (अलवर) में नवीन ओएंडएम अधिशाषी अभियन्ता कार्यालय तथा जालूकी (डीग) में नवीन कनिष्ठ अभियन्ता कार्यालय भी स्थापित किए जा चुके हैं।

जयपुर मेट्रो फेज-2 : प्रहलादपुरा में सॉइल टेस्टिंग शुरू, 918 करोड़ का प्रोजेक्ट, जल्द बनेंगे मेट्रो पिलर

मुख्यमंत्री खुद कर रहे मॉनिटरिंग, 10 एलिवेटेड स्टेशन बनने से होगा मेट्रो का विस्तार

लोक टूडे। जयपुर

जयपुर मेट्रो फेज-2 के तहत टोंक रोड पर प्रहलादपुरा से मिट्टी के परीक्षण का काम शुरू कर दिया गया है, जिससे अब यह बहुप्रतीक्षित परियोजना प्लानिंग फेज से निकलकर धरातल पर आ गई है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों के बाद इस काम में काफी तेजी आई है। मिट्टी की जांच पूरी होते ही पिलर (पीयर) खड़े करने और नींव डालने का मुख्य निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। जयपुर मेट्रो फेज-2 के शिलान्यास से पहले प्रशासन पूरी तैयारियां करने में लगा है। मेट्रो अधिकारियों की मानें तो पैकेज वन का काम धरातल पर जल्द ही रफ्तार पकड़ने वाला है। माना जा रहा है कि मिट्टी की जांच पूरी होने के बाद ही रूट पर पियर (पिलर) खड़े करने का काम विधिवत रूप से शुरू हो सकेगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि जयपुर मेट्रो के खंभे (पियर्स) बिना किसी धंसाव के भारी दबाव झेल सकें, मिट्टी की बेयरिंग कैपेसिटी मापी जाती है। इसी जांच के आधार पर स्ट्रक्चरल डिज़ाइन तय होती है। यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद मौके पर खंभे और निर्माण कार्य आधिकारिक रूप से शुरू हो जाएगा।

918.04 करोड़ से अधिक की लागत का प्रोजेक्ट -

सीएम भजनलाल के निर्देशों के बाद राजधानी जयपुर में मेट्रो परियोजना के दूसरे चरण को लेकर काम में तेजी आ गई है। जयपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने फेज-2 के तहत महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों के लिए 918.04 करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाले प्रोजेक्ट के लिए स्वीकृति पत्र (एलओए) जारी कर दिया है।

10 एलिवेटेड स्टेशन बनेंगे-

इस प्रोजेक्ट के तहत फेज-2 के पहले पैकेज में प्रहलादपुरा से पिंजरापोल गोशाला तक लगभग 12 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर विकसित किया जाएगा। इस कॉरिडोर पर एलिवेटेड वायाडक्ट के साथ कुल 10 एलिवेटेड स्टेशन बनाए जाएंगे। इनमें प्रहलादपुरा, मानपुरा, बीलवा कलां, बीलवा, गोनेर मोड़, सीतापुरा, जेईसीसी, कुंभा मार्ग, हल्दीघाटी गेट और पिंजरापोल गोशाला शामिल हैं। यह कॉरिडोर शहर के तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्रों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

मेट्रो फेज-2 के लिए जल्द होगी निविदा प्रक्रिया -

परियोजना में मेट्रो डिपो तक पहुंचने के लिए स्पर लाइन का निर्माण भी शामिल है, जिससे संचालन और रखरखाव में सुविधा मिलेगी। कुल प्रस्तावित 41 किलोमीटर मेट्रो नेटवर्क में से शेष 29 किलोमीटर के लिए भी जल्द निविदा प्रक्रिया शुरू की जाए, ताकि परियोजना को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जयपुर मेट्रो फेज-2 के लिए 13,037.66 करोड़ रुपए के विशाल बजट को मंजूरी दी थी। इसके बाद राजस्थान सरकार मेट्रो फेज-2 के इस प्रोजेक्ट को जमीन पर उतारने के लिए तेजी से काम कर रही है।

फैक्ट फाइल -

कुल बजट (लागत) - 918 करोड़ रुपए
रूट (कॉरिडोर) - प्रह्लादपुरा से पिंजरापोल गोशाला
कुल लंबाई - 12 किलोमीटर
मेट्रो स्टेशन्स - 10 स्टेशनों का होगा निर्माण
काम की समय सीमा - 34 महीने

तारीख तय, तैयारी शून्य : हाईकोर्ट की 31 जुलाई डेडलाइन, अब तक पहले गियर में ही अटकी चुनावी गाड़ी

पंचायत-निकाय चुनाव पर संशय, सरकार की घड़ी और हाईकोर्ट की डेडलाइन आमने-सामने

नुपुर जारोली लोढ़ा। जयपुर

पंचायत-निकाय चुनाव को लेकर स्थिति अभी भी संशय में बनी हुई है। चुनाव कौन जीतेगा? ये सबसे बड़ा सवाल नहीं है, बल्कि चुनाव होंगे भी या नहीं? पेंच यहां अटका गया है। क्योंकि एक तरफ हाईकोर्ट की तल्ख टिप्पणी है तो दूसरी तरफ सरकार की मजबूरियों का दावा। वहीं बीच में फंसा है राजस्थान का लोकतंत्र। हाईकोर्ट ने 31 जुलाई डेडलाइन तय की है, लेकिन हालात यह है कि चुनावी गाड़ी अभी भी 'पहले गियर' में ही अटकी हुई दिखाई दे रही है। दरअसल चुनावों में OBC आरक्षण तय करने के लिए गठित आयोग को 20 जून तक रिपोर्ट देनी है, लेकिन आयोग खुद कह रहा है कि उसके पास स्पष्ट आंकड़े ही नहीं हैं। ऐसे में चुनाव की पूरी इमारत जिस नींव पर खड़ी होनी थी, वो नींव अभी तक तैयार नहीं हुई है। यही स्थिति फिलहाल राजस्थान सरकार की दिखाई दे रही है। ओबीसी आयोग का कहना है कि सरकार ने जो आंकड़े दिए थे, वे अधूरे थे। अब नए फॉर्मेट में डेटा चाहिए, लेकिन दूसरी तरफ जिला प्रशासन जनगणना के काम में व्यस्त है। स्टाफ की कमी है और आयोग के अपने संसाधन भी सीमित हैं।

हाईकोर्ट का फैसला और सख्त रुख-

कोर्ट ने राज्य सरकार और राज्य निर्वाचन आयोग को साफ कहा कि चुनाव 31 जुलाई 2026 से आगे नहीं टाले जा सकते। शहरी निकायों के वार्डों के परिसीमन और मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण का काम 20 जून तक पूरा करने का लक्ष्य दिया गया है। सरकार ने भीषण गर्मी, बारिश का मौसम, नया स्कूल सत्र और खेती के दिनों का हवाला देकर चुनाव दिसंबर तक टालने का अनुरोध किया था। इस पर कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि 'राजस्थान में ऐसी चरम मौसम स्थिति नहीं है जिसे नागरिक सहन न कर सकें, इसलिए ये बहाने मान्य नहीं हैं'।

चुनाव पर संशय के प्रमुख कारण -

1. OBC आरक्षण की स्थिति : अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण का सटीक डेटा और आयोग की रिपोर्ट अभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, जिसे कोर्ट ने 20 जून तक जमा करने का निर्देश दिया है।
2. सुप्रीम कोर्ट जाने की तैयारी : हाईकोर्ट के फैसले के बावजूद, चुनाव आयोग या राज्य सरकार इस समय-सीमा के भीतर चुनाव कराने में व्यावहारिक कठिनाइयां (जैसे प्रशासनिक अमले की कमी, भीषण गर्मी और बारिश का मौसम) महसूस कर रही है।
3. सुप्रीम कोर्ट में याचिका : इस मामले के समाधान के लिए राज्य निर्वाचन आयोग या सरकार सुप्रीम कोर्ट का रुख कर सकती है। वहीं, चुनाव में देरी के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर करने वाले पक्ष ने भी सुप्रीम कोर्ट में 'कैविएट' याचिका लगा दी है ताकि उनका पक्ष सुने बिना कोई एकतरफा फैसला न हो।

हनुमान बेनीवाल के लिए अकेला ही काफी हूं : मदन राठौड़

लोक टूडे। जयपुर

आरएलपी संयोजक हनुमान बेनीवाल के विवादित बयान के बाद बीजेपी नेताओं की भी बयानबाजी तल्ख हो गई है। हनुमान बेनीवाल समर्थकों ने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के काफिले को रोककर प्रदर्शन किया था, जिसके बाद राठौड़ ने आरोप लगाया कि मैं तो आरएलपी कार्यकर्ताओं का ज्ञापन लेने के लिए कार से उतरने वाला था, लेकिन उनका इरादा ज्ञापन देने का नहीं मेरी हत्या का था। उन्होंने कार रोकते ही कार पर डंडे बरसाने शुरु कर दिए। मैं हनुमान बेनीवाल को कहना चाहता हूं मैं इस तरह के विरोध से डरने वाला नहीं हूं। हनुमान बेनीवाल जैसे लोगों के लिए मैं अकेला ही काफी हूं। आगे उन्होंने कहा कि हनुमान बेनीवाल कोई बहादूर नहीं है, वह बच्चों और युवाओं को भड़काते है। उनकी कई बातें ऐसी है जो सार्वजनिक मंच पर बोलनी नहीं चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूं ये बाजू आजमाए हुए हैं, कोई चिंता की बात नहीं है।

लोकतंत्र में गुंडागर्दी की छूट नहीं :

राठौड़ ने कुचामन में आरएलपी समर्थकों के डंडे बरसाने को गलत माना। उनका कहना है कि विरोध करने का भी तरीका होता है। विरोध का सबको अधिकार है, लेकिन गुंडागर्दी करने की किसी को भी छूट नहीं दी जा सकती है। इस बयान के जरिए उन्होंने इस उग्र विरोध के खिलाफ अपनी तीखी नाराजगी और आक्रामक तेवर दिखाए।

यह विवाद का कारण :

यह जुबानी जंग राजस्थान में दोनों दलों के बीच बढ़ते तनाव को दर्शाती है। बेनीवाल ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के लिए एक आपत्तिजनक शब्द का इस्तेमाल किया था, जिस पर बीजेपी नेताओं ने कड़ी आपत्ति जताई। इसके बाद राठौड़ ने बेनीवाल की राजनीति को 'विष का पौधा' तक कह दिया। राठौड़ ने उनके नेतृत्व के तरीकों की आलोचना की और सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी व्यक्त कीं। इसके अलावा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने ऐसे राजनीतिक व्यवहार के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाते हुए सामाजिक बहिष्कार जैसी टिप्पणियां भी की। दूसरी ओर हनुमान बेनीवाल मदन राठौड़ के बयान से बहुत नाराज है और उन्होंने मदन राठौड़ के सामाजिक बहिष्कार के बयान को मुद्दा बनाते हुए इसे खांप पंचायत से जोड़कर कोर्ट में ले जाने की बात कही है। फिलहाल राजनीति के गलियारों में बेनीवाल और बीजेपी नेताओं के बीच बयानबाजी का दौर जारी है।

कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर 6 जून को भारत लौटेंगे

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे को लेकर जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करेंगे, इंस्टा फॉलोअर 2 करोड़ पार

नई दिल्ली

कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके 6 जून को भारत लौटेंगे। इसके बाद वे दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करेंगे। इस प्रदर्शन में वे शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग करेंगे। दिपके ने इसकी जानकारी अपने इंस्टा अकाउंट 'कॉकरोच इज बैक' पर दी है। कॉकरोच जनता पार्टी एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है, जो भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत की हालिया कॉकरोच टिप्पणी के बाद सामने आया। सीजेपी के इंस्टाग्राम पर 2 करोड़ से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। 30 साल के अभिजीत दिपके महाराष्ट्र के संभाजी नगर के रहने वाले डिजिटल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अभिजीत ने पुणे से पत्रकारिता की पढ़ाई की है। फिलहाल वो अमेरिका की बोस्टन यूनिवर्सिटी में पब्लिक रिलेशन से मास्टर्स की पढ़ाई कर रहे हैं।

लेबनान हमले पर भड़का ईरान, सीजफायर उल्लंघन का लगाया आरोप

तेहरान । ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने लेबनान पर हुए हमलों को अमेरिका-ईरान संघर्षविराम (सीजफायर) नियमों का उल्लंघन बताया और कहा कि इसके परिणाम की जिम्मेदारी अमेरिका और इजरायल की होगी। अराघची ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'तत्काल ध्यान देने योग्य बात यह है कि ईरान और अमेरिका के बीच हुआ संघर्षविराम सभी मोर्चों पर लागू होता है, जिसमें लेबनान भी शामिल है।' उन्होंने कहा, 'किसी एक मोर्चे पर संघर्षविराम का उल्लंघन, सभी मोर्चों पर संघर्षविराम का उल्लंघन माना जाएगा।'

ईरानी विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि संघर्षविराम के किसी भी उल्लंघन के परिणामों की जिम्मेदारी अमेरिका और इजरायल पर होगी। रविवार को ब्यूफोर्ट किले पर कब्जे का ऐलान इजरायल की ओर से किया गया था। इसे रणनीतिक दृष्टि से काफी अहम माना जाता है। कब्जा करने के बाद किले पर इजरायली झंडा भी फहराया गया। रक्षा मंत्री इजराइल काट्ज ने इसे रणनीतिक जीत करार दिया था। वहीं, सोमवार को इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने बेरूत के दक्षिणी उपनगर दहियेह स्थित हिज्बुल्लाह के ठिकानों पर हमले का आदेश आईडीएफ को दिया।

म्यांमार में शांति और संवाद की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए भारत तैयार: पीएम मोदी

नई दिल्ली।

भारत और म्यांमार ने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के साथ ही व्यापार, निवेश, संपर्क (कनेक्टिविटी), विकास साझेदारी, क्षमता निर्माण, सुरक्षा और सीमा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई है। सोमवार को नई दिल्ली स्थित हैदराबाद हाउस में हुई विस्तृत वार्ता के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और म्यांमार के राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग ने दोनों पड़ोसी देशों के बीच संबंधों को और गहरा करने पर सहमति व्यक्त की। बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने म्यांमार में शांति और संवाद की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में भारत हर तरह की मदद को तैयार है। उन्होंने संघीय शासन व्यवस्था और आर्थिक विकास के अनुभव साझा करने की भी बात कही।

विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और म्यांमार के राष्ट्रपति की बातचीत व्यापक रही और दोनों देशों ने शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए साझेदारी को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई। उन्होंने कहा कि भारत म्यांमार के लिए एक भरोसेमंद पड़ोसी और संकट के समय में पहला सहयोगी है।

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट' और 'महासागर' नीतियों के अनुरूप भारत हमेशा म्यांमार का सहयोग करता रहेगा।

राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग का सोमवार को ही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात का कार्यक्रम है। वे राजधानी में 'द लाइट एंड द लोटस: रेलिक्स ऑफ द अवेकेंड वन' नामक सांस्कृतिक प्रदर्शनी का भी दौरा करेंगे।

दावा- ईरान ने अमेरिका से सीजफायर वार्ता रोकी

होर्मुज स्ट्रेट फिर बंद करने की तैयारी; लेबनान पर हमलों के विरोध में फैसला

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी

ईरान ने अमेरिका के साथ सीजफायर वार्ता फिलहाल रोक दी है। ईरानी न्यूज एजेंसी तस्नीम के मुताबिक, तेहरान ने कहा है कि जब तक लेबनान में इजराइली हमले नहीं रुकते, तब तक मध्यस्थों के जरिए अमेरिका के साथ कोई बातचीत नहीं होगी। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान का कहना है कि लेबनान में शांति बनाए रखना सीजफायर की अहम शर्तों में शामिल था। लेकिन अब लेबनान समेत कई मोर्चों पर इस समझौते का उल्लंघन हो रहा है।

ईरान ने गाजा और लेबनान में इजराइल की सैन्य कार्रवाई तुरंत रोकने और लेबनानी क्षेत्र से इजराइली सेना की पूरी वापसी की मांग की है। तेहरान का कहना है कि जब तक इन मुद्दों पर उसकी और उसके सहयोगियों मांगें पूरी नहीं होतीं, तब तक बातचीत दोबारा शुरू नहीं होगी। तस्नीम की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि ईरान और उसके सहयोगी होर्मुज स्ट्रेट पूरी तरह बंद करने और अन्य मोर्चों को एक्टिव करने के ऑप्शन पर भी विचार कर रहे हैं। इनमें लाल सागर के दक्षिणी हिस्से में स्थित बाब अल-मंदेब स्ट्रेट भी शामिल है।

पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स...

ब्यूफोर्ट किले पर इजराइल का कब्जा: इजराइली सेना ने दक्षिणी लेबनान में 900 साल पुराने ब्यूफोर्ट किले और आसपास की पहाड़ियों पर कब्जा कर लिया। यह पिछले 26 साल में इजराइल की लेबनान में सबसे बड़ी घुसपैठ है। इमरजेंसी मीटिंग बुलाने की मांग: फ्रांस ने लेबनान में इजराइल की बढ़ती सैन्य कार्रवाई को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपात बैठक बुलाने की मांग की है। ट्रम्प बोले- ईरानी सेना के खिलाफ सख्त एक्शन नहीं: ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका ने ईरानी सेना पर उतनी सख्त कार्रवाई नहीं की, जितनी वह दूसरे देशों की सेनाओं के खिलाफ करता रहा है। ईरान को अमेरिका पर भरोसा नहीं: ईरान ने कहा है कि जब तक यह भरोसा नहीं हो जाता कि उसके अधिकार पूरी तरह सुरक्षित हैं, तब तक अमेरिका के साथ किसी भी समझौते को मंजूरी नहीं दी जाएगी। अमेरिका ने ईरान जा रहे जहाज को रोका: अमेरिका ने ईरान की ओर जा रहे एक और मालवाहक जहाज को रोक दिया। 17 अप्रैल से अब तक अमेरिका 6 जहाजों को ईरान जाने से रोक चुका है।

संपादकीय

सीमा पार से सिर्फ घुसपैठ नहीं, भीतर तक फैलता सुरक्षा का खतरा

अब सीमा से पंद्रह किलोमीटर तक के क्षेत्र में हर अवैध निर्माण के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी और शून्य सहनशीलता की नीति के तहत ऐसे निर्माणों को ध्वस्त किया जाएगा।

पाकिस्तान की ओर से भारतीय सीमा में घुसपैठ और इससे जुड़ी आतंकवाद की समस्या ने भारत को किस स्तर तक नुकसान पहुंचाया है, यह छिपा नहीं है। हालांकि सीमा पर तैनात सुरक्षा बल के जवान अपनी ओर से पूरी कोशिश करते हैं कि पाकिस्तानी ठिकानों से भारत में घुसपैठ करने वालों को रोकें, गिरफ्तार करें या फिर जरूरत पड़ने पर उन्हें निशाना बनाया जाए। विडंबना यह है कि आज भी सीमा पर भारत को अक्सर घुसपैठ और आतंकी हमलों का सामना करना पड़ता है।

इसकी एक बड़ी वजह सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था के तार और निगरानी का तंत्र अपेक्षित स्तर पर मजबूत न होने को माना जाता रहा है। फिर सीमा पर स्थित रिहाइशी इलाकों में भी कई बार आतंकी सूत्रों से जुड़े लोगों की पहचान नहीं पाने के अपने जोखिम हैं। शायद यही वजह है कि गृहमंत्री अमित शाह ने साफ लहजे में पाकिस्तान सीमा के आसपास सुरक्षा के लिहाज से सख्त नीति अपनाने को कहा है।

गौरतलब है कि राजस्थान के सीमावर्ती इलाके के आसपास के जिलों में सुरक्षा को लेकर गृहमंत्री अमित शाह ने उच्चस्तरीय बैठक में भारत और पाकिस्तान सीमा के आसपास चौतरफा सुरक्षा योजना के तहत कई अहम निर्देश दिए हैं। इसके मुताबिक, अब सीमा से पंद्रह किलोमीटर तक के क्षेत्र में हर अवैध निर्माण के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी और शून्य सहनशीलता की नीति के तहत ऐसे निर्माणों को ध्वस्त किया जाएगा। इस

सख्ती की वजह मुख्य रूप से राजस्थान के सीमाई इलाके के जिलों में घुसपैठ, मादक पदार्थों की तस्करी और अन्य गैरकानूनी गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगाना है। यह छिपा नहीं है कि सीमा से सटे क्षेत्र में पाकिस्तान की ओर से अलग-अलग रूप में होने वाली घुसपैठ अंतिम तौर पर भारत में आतंकवाद की जड़ों को मजबूत करती है। खासतौर पर सीमावर्ती इलाकों में अवैध रूप से रहने वाले कुछ लोग कई बार आतंकियों के लिए अप्रत्यक्ष सहायक के रूप में काम करते हैं। इनमें से कई लोग भ्रष्टाचार का सहारा लेकर न केवल स्थानीयता का फर्जी दस्तावेज बनवा लेते हैं, बल्कि संदिग्ध वित्तीय लेनदेन, अवैध गतिविधियों और सीमा पार से मादक पदार्थों की तस्करी में भी लिप्त होते हैं।

यह अकारण नहीं है कि आतंकवाद के खिलाफ चलने वाले अभियान के सामने अक्सर आंतरिक मोर्चों पर खड़ी जटिलताएं एक बड़ी चुनौती होती हैं। दरअसल, पाकिस्तान स्थित ठिकानों से अपनी गतिविधियां संचालित करने वाले आतंकी संगठनों ने सीमावर्ती इलाकों में अपना नेटवर्क खड़ा करने के लिए स्थानीय आबादी में घुसपैठ करके अपनी जगह बनाने को एक ढांचे के रूप में विकसित किया है। इसके अलावा, वे कारोबारी प्रतिष्ठानों से संपर्क साध कर भी आतंकी संगठनों के वित्तपोषण का एक संजाल खड़ा करते हैं।

पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को शह देने का मुद्दा कई बार अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी उठ चुका है। भारत की ओर से लगातार चेतावनी और सख्ती के बावजूद सीमा पर घुसपैठ और आतंकवादी गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगा पाना अब तक संभव नहीं हो सका है। पिछले वर्ष पहलगाम में पर्यटकों पर हमले से लेकर आतंकी वारदात की एक लंबी श्रृंखला रही है। इस लिहाज से देखें, तो सीमावर्ती इलाकों में आतंकी तत्त्वों या उनके लिए सहयोगी के रूप में काम करने वाले तंत्र के खिलाफ सख्ती एक जरूरी कार्रवाई है।

लफ्ज़ों में जिंदगी की धड़कन छोड़ गए बशीर बद्र

बशीर बद्र अपने शब्दों में तन्हाई और पीड़ा को बखूबी उकेरते थे। वे चुभती जरूर थीं, मगर मन के किसी कोने दर्ज हो जाती थीं।

आम लोगों के जीवन के गहरे जख्मों को जीवंत शब्द देने वाले बशीर बद्र अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन दिल को छू लेने वाली अपनी शायरी के लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे। वे जितने सरल थे, उनकी रचनाओं में उतनी ही सादगी और सहजता थी। उनमें इस कदर भाव अभिव्यक्त होते थे कि हर किसी को उनकी पंक्तियां अपनी-सी लगती थीं। आधुनिक गजल के इस उस्ताद के रचना संसार में जिंदगी का हर वह लम्हा था, जिसे मनुष्य जीता है। बशीर बद्र अपने शब्दों में तन्हाई और पीड़ा को बखूबी उकेरते थे। वे चुभती जरूर थीं, मगर मन के किसी कोने दर्ज हो जाती थीं। वे अपनी शायरी में उस शहर को भी जीते रहे, जहां अजनबियत बढ़ती चली गई थी। उन्होंने नए मिजाज के शहर को वक्त रहते पहचान लिया था। वे संघर्ष भरे रास्ते से गुजरे और जिंदगी की शाम आने से पहले उन्होंने लोगों की जुबान पर चढ़ जाने वाली कालजयी पंक्तियां रचीं। बशीर साहब के मशहूर शेर में समाज के जटिल ताने-बाने के बीच जद्दोजहद करने का जज्बा दिखता है। उनमें जिंदगी के कई पाठ हैं। उनकी शायरी हमें जीने का रास्ता दिखाती है।

हममें से न जाने कितने ऐसे लोग होंगे जो किसी न किसी मौके पर उनकी शायरी को याद करते रहे और उन्हें दोहराते रहे हैं। जीवन में संवेदनात्मक उतार-चढ़ाव के वक्त न जाने के कितने लोगों ने उनकी शायरी को अपना सहारा बनाया होगा। बशीर बद्र अपने जीवन में जिस मुकाम पर पहुंचे, वहां तक पहुंचना कोई आसान नहीं था। अपने दम पर उन्होंने पढ़ाई पूरी की और कॉलेज में लंबे समय तक पढ़ाया। हिंदी और फारसी पर उनकी गहरी पकड़ थी। वे उर्दू तक सीमित नहीं रहे। उनकी कई रचनाओं का अनुवाद हुआ और दुनिया भर में वे मशहूर हुईं। कई बड़े पुरस्कारों से नवाजे गए बशीर हमेशा विनम्र रहे। दुनिया को मुसाफिरखाना मानने वाले बशीर बद्र के निधन से उनके प्रशंसक दुखी हैं।

आज का कार्टून

भारतीय नदियों की दुखद कहानी

ऋतुपर्ण दवे

> घर से मोहल्ला, मोहल्ले से वार्ड और वार्ड से नगर के समूचे कचरा निपटान के लिए सतत प्रभावी दृष्टिकोण अपनाना होगा। कचरे का समाधान हो जाएगा, तो नदियां अपना स्वरूप पा सकेंगी और ये हमारे जीवन की धारा बनेंगी।
>
> भारत में प्रदूषित नदियां चिंता का विषय बनी हुई हैं। सरकार कई योजनाएं चला रही है, लेकिन धरातल पर कुछ दिखता नहीं। ऐसा भी नहीं है कि नदियों के प्रदूषण को रोकने के लिए बजट की कमी हो। कमी है तो इच्छाशक्ति की। हालत यह कि नदियों की दशा सुधरने के बजाय दिन-प्रतिदिन खराब हो रही है।

सर्वोच्च न्यायालय से लेकर विभिन्न राज्यों के उच्च न्यायालयों ने भी इस पर चिंता जताई है। हम छठ पर्व पर हर साल यमुना की बदहाली देखते हैं। उन दिनों यह चर्चा का विषय बनती है, लेकिन पर्व निकलते ही सब भूल जाते हैं कि अगली बार सुधार के लिए भी कुछ करना है। कमोबेश यही स्थिति देश की दूसरी नदियों की है। कई बार न्यायालयों की सख्त टिप्पणियां सामने आईं, लेकिन किसी पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

दिल्ली में यमुना को तो दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक माना जाने लगा है। यह नदी दिल्ली में जल आपूर्ति का बड़ा सहारा है। इसमें प्रदूषण की वजह नजफगढ़ का नाला है। इसका प्रदूषित पानी रासायनिक अवशेष के साथ यमुना में मिलता है। दिल्ली तक बह कर आने वाली यमुना नजफगढ़ नाले के कारण 70 फीसद से अधिक प्रदूषित हो जाती है। यहां अमोनिया का स्तर भी बहुत अधिक बढ़ जाता है।

बात केवल राष्ट्रीय राजधानी की नहीं है। कई राज्यों में भी नदियां प्रदूषित हो रही हैं। चेन्नई की कूउम नदी का भी यही हाल है। इसे अब देश की सबसे प्रदूषित नदी माना जाता है। दक्षिण में भी नदियों का प्रदूषित होना चिंता का विषय है। गंगा-यमुना के अलावा भी ऐसी नदियां हैं, जो प्रदूषण का बोझ उठाए चुपचाप बह रही हैं और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं।

अन्य प्रदूषित नदियों में साबरमती और दामोदर नदी भी शामिल हैं। औद्योगिक कचरा, अनुपचारित गंदा पानी, प्लास्टिक और कृषि रसायनों के कारण भी कई नदियां बेहद जहरीली हो चुकी हैं। इनमें गंगा की सहायक नदियां भी शामिल हैं। ऐसा भी नहीं है कि नदियां किसी एक स्थान पर ही प्रदूषण का शिकार होती हैं। एक ही नदी कई स्थानों पर उस क्षेत्र की गंदगी को लेकर आगे की ओर बढ़ती हैं। कई नदियां तो दर्जनों स्थानों पर और कुछ तो इससे भी ज्यादा जगहों पर गंदगी का वाहक बन चुकी हैं।

नदियों को मैली होने से बचाने के लिए किसी भी स्तर पर गंभीरता नहीं दिखती। नदी में गंदगी मिलने पर किसी को भी दुख नहीं होता। एक ओर तो नागरिक अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहे, तो दूसरी ओर स्थानीय निकाय भी इस दिशा में काम नहीं कर रहे। वे नदियों का दुरुपयोग इसलिए करते हैं, ताकि उनके नगर-कस्बे या गांवों की समूची गंदगी साफ हो जाए और नदी उनका बोझ ढोते हुए आगे बढ़ जाए। इसे रोकने के लिए स्थानीय प्रशासन की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

हमारा ध्यान देश की बड़ी नदियों पर रहता है। बाकी नदियों की दशा पर हम सोचते ही नहीं हैं। गंगा नदी में बेतहाशा बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं चलाई गईं, लेकिन वह प्रदूषण से मुक्त नहीं हो पा रही है। वाराणसी में गंगा किनारे हजारों शवों का दाह संस्कार इसके किनारे किया जाता है और अस्थियों को विसर्जित किया जाता है। कई लोग तो सीधे शव को ही बहा देते हैं, लेकिन गंगा के पावन होने पर कोई आंच नहीं आती। यह सदियों से चला आ रहा है।

गंगा विश्व की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक बन

अब बढ़ती जनसंख्या और तीव्र औद्योगीकरण के कारण गंगा विश्व की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक बन गई है। गंगा नदी के किनारे बसे इलाकों में करीब चार करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। इसके प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण मानव मल है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिदिन लगभग पांच अरब लीटर गंदा पानी नदी में मिल जाता है। कहने को दूषित जल को शोधित करने लिए बड़े-बड़े संयंत्र लगाए गए हैं, लेकिन वास्तव में एक चौथाई ही उपचारित हो पाता है। गंगा के पानी की स्थिति यह है कि इसमें जीवाणुओं का स्तर स्नान के लिए सुरक्षित स्तर से 150 गुना अधिक है।

कमोबेश यही हाल अमरकंटक से निकली नदी नर्मदा और सोन का है। नर्मदा अपने उद्गम से थोड़ा आगे से ही प्रदूषण की मार झेलती दिखती है, तो सोन नदी चंद किलोमीटर का सफर पूरा करने के बाद एक कागज कारखाने का अपशिष्ट झेलती और जलशोधन का 'नाटक' देखती आगे बढ़ती है। जब देश की बड़ी नदियों का यह हाल है, तो शेष के बारे में केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है।

गंगा नदी को साफ करने पर 1986 से अब तक बीस हजार करोड़ रुपए से अधिक खर्च हो चुके हैं, जिसमें 2014 में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम की शुरुआत के बाद से 13 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि भी शामिल है। वर्ष 2019 के एक आकलन में क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया ने पाया कि गंगा के किनारे बसे ज्यादातर शहर सीधे अपना कचरा नदी में डाल रहे थे, क्योंकि उनके पास कचरा निपटान संयंत्र नहीं थे। आज स्थिति यह है कि शोधन संयंत्र न लगने या सही तरीके से उनका प्रबंधन न होने से अधिकतर नदियों में गंदगी मिल रही हैं।

नदियों में बढ़ते प्रदूषण के आंकड़ों को लेकर कहीं कोई चिंता नहीं दिखती है। ऑस्ट्रिया के लक्समबर्ग में एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय संस्था इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एप्लाइड सिस्टम्स एनालिसिस (आईआईएएसए) का एक शोध वास्तविकता पर काफी हद तक प्रकाश डालता है। इसके अनुसार वर्तमान में दुनियाभर के नगरपालिका क्षेत्र के कचरे का 17 फीसद हिस्सा भारत में है। इससे निपटने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को तत्काल अमल में लाना होगा, नहीं तो नदियों में कचरे के जाने की समस्या बढ़ती रहेगी। नगरपालिका क्षेत्र के ठोस कचरे के निपटान के लिए एक वैश्विक संधि हो जो यह सुनिश्चित करे कि सभी देश समान नियमों का पालन करें, जिससे एक देश से दूसरे देश में नदियों से कचरा आने का जोखिम कम हो जाए। यदि ऐसा हो जाता है, तो राष्ट्रीय स्तर पर कचरे के फैलने की विश्वव्यापी समस्या के लिए ऐसा वैश्विक समझौता ज्यादा सक्षम होगा और इससे व्यापक स्तर पर समाधान निकलेगा।

भारत में नगरपालिका क्षेत्र से रोजाना तकरीबन एक लाख 52 हजार 245 मीट्रिक टन ठोस कचरा निकलता है। यह कचरा आमतौर पर घरों का होता है। जैव चिकित्सा अपशिष्ट भी एक बड़ी समस्या बन चुका है। वर्ष 2021 में स्वच्छ भारत मिशन 2.0 शुरू किया गया था, तब लक्ष्य रखा गया कि 2026 तक सभी शहरों को कचरा मुक्त बनाना है। जिसमें कई शहरों-कस्बों और नगरों में सफलता भी दिख रही है। गौरतलब है कि नगर की स्वच्छता और कचरा प्रबंधन से ही नदियों की सफाई जुड़ी हुई है। लोग अब इस बात को समझने भी लगे हैं।

घर से मोहल्ला, मोहल्ले से वार्ड और वार्ड से नगर के समूचे कचरा निपटान के लिए सतत प्रभावी दृष्टिकोण अपनाना होगा। कचरे का समाधान हो जाएगा, तो नदियां अपना स्वरूप पा सकेंगी और ये हमारे जीवन की धारा बनेंगी। इसके लिए जन और तंत्र दोनों को ही जुटना होगा। जब नदियों में रासायनिक कचरा नहीं रहेगा, तो वे अविरल बहेंगी। बस जरूरत है तो इच्छाशक्ति की।

पानी का संकट दुनिया भर में गहराता जा रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। आधिकारिक रिपोर्ट के मुताबिक पृथ्वी पर कुल उपलब्ध पानी का 97.5 फीसदी हिस्सा समुद्री है, बाकी 2.5 फीसदी हिस्सा मीठा जल है, लेकिन इसका भी काफी मात्रा प्रदूषित है, जो पीने योग्य नहीं है। एक अनुमान के अनुसार कुल जल का केवल एक फीसदी हिस्सा ही पीने योग्य है, जो दुनिया की आबादी के लिहाज से बहुत कम है। ऐसे में जल संकट भयावह होता जा रहा है।

मन के विचार और कर्मों का फर्क समझिए

> एक दिन एक बच्चा अपने पिता के साथ बाजार गया। बाजार में चलते-फिरते उसकी नजर खिलौनों की दुकान पर पड़ी। दुकान के बाहर ही प्लास्टिक की एक बंदूक सजी लटक रही थी। बंदूक देख कर उससे रहा नहीं गया। वह अपने पिता से बंदूक लेने की जिद करने लगा। काफी देर तक टालने और मना करने पर भी न मानने के बाद पिता ने उसे बंदूक खरीद दी।

वह बच्चा घर पहुंचा, तो उसने सबसे पहले अपनी मां को बंदूक दिखाई और बोला, 'ममी, इस बंदूक पर मेरे सपने टिके हैं!' सुन कर मां घबरा गई कि बेटा क्या कह रहा है। वह सोचने लगी कि कहीं उसका बच्चा बड़ा होकर चोर-डकैत तो नहीं बन जाएगा! फिर शाम होते ही वह अपनी खिलौना-बंदूक लेकर गली-मुहल्ले के अपने यार-दोस्तों पर रोब जमाने लगा। एक मित्र ने समझाया, 'यार, बंदूक भी कोई पसंद करता है? यह किस काम की है? कुछ लेना ही था, तो क्रिकेट का बल्ला और गेंद लेता। खेलते-खेलते खिलाड़ी बन जाता।' फिर उसने साफ-साफ पूछा, 'भई, तुमने बंदूक ली ही क्यों?'

बच्चा जब समझाने लगा तो कहा- 'मैंने बंदूक यह सोच कर ली है कि मैं बड़ा होकर सेना में जाऊंगा और देश की रक्षा करूंगा।' सुन कर दोस्त हक्का-बक्का रह गया! जब उसकी मां को पता चला कि उसका बच्चा ऐसा सोचता है, तो उसका भी सिर गर्व से ऊंचा उठ गया।

ओशो के शब्द हैं, 'उस मां को, उस पिता को, मैं सच्चा माता-पिता कहता हूं और उस गुरु को, मैं सच्चा गुरु कहता हूं, जो अपने बच्चों और शिष्यों से कहे कि तुम खुद जैसे बनने की कोशिश करना। साथ ही, कभी भूल कर भी किसी और जैसे मत बनना। तो तुम्हारे भीतर एक सुगंध, एक सौरभ, एक गरिमा पैदा होगी, जिसके लिए तुम दुनिया में आए हो।' आमतौर पर, ऊपर-ऊपर से देख-सुन कर हर कोई अपने मन में किसी के बारे में धारणा बुन लेता है। मिसाल के तौर पर, अगर कोई युवा बेरोजगार तेज धार का चाकू खरीद लाए, तो उसे देखने वाले लोगों के दिमाग में पहला खयाल जरूर कौंधेगा कि चाकू से कुछ 'गलत' काम करने का इरादा होगा। बेशक उसकी ऐसी सोच हरगिज न रही हो। हो सकता है कि उसने अपने घर पर फल और सब्जियां काटने के लिए चाकू खरीदा हो।

इसी तरह एक बार एक घरेलू सहयोगी नरेश चूहे मारने की टिकिया लेने मुहल्ले की परचून दुकान पर गया। उसने दुकानदार की तरफ सौ रुपए का नोट बढ़ाया और कहा, 'भैया, एक फलां कंपनी की चूहे मारने की टिकिया दीजिए।' दुकानदार ने उससे जानना चाहा कि इसका क्या करोगे, तो वह बिना जवाब दिए, गुमसुम दुकानदार को ताकता रहा। शायद उसे दुकानदार से ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी। दुकानदार ने उसे चूहे मारने की टिकिया देने से मना कर दिया। नरेश खाली हाथ घर लौट आया और अपने साहब से बोला कि दुकानदार ने पता नहीं क्यों उसे देने से इनकार कर दिया है। जबकि कई टिकियां सामने ही रखी हुई थीं। साहब नरेश को परचून की दुकान पर दुबारा ले गए। इस बार साहब ने वही टिकिया मांगी, तो दुकानदार ने बिना कुछ कहे-पूछे निकाल कर सामने रख दी। साहब ने दुकानदार से जानना चाहा कि आपने नरेश को क्यों नहीं दी, तो दुकानदार बोला कि नरेश मुझे बता नहीं पाया कि इसका करेगा क्या! अगर वह कहता कि घर में उससे चूहे भगाने हैं, तो मैं फौरन दे देता, लेकिन वह खामोश रहा। इसलिए दुकानदार को संदेह हुआ कि छोटू का इरादा कुछ 'गलत' करने का है। यानी कहीं खुद खा ली, तो वह दुकानदार ही फंस जाएगा।

यह भी सच है कि मन में विचार रखने या महज इरादा होना, तब तक अपराध नहीं माना जाता, जब तक उसे अंजाम न दिया जाए। सड़क पर सफर के दौरान वाहनों का जाम लग जाने की सूरत में अगर कोई मन ही मन जल्दी पहुंचने के लिए उल्टी तरफ से जाना चाहे, तो कोई यातायात पुलिसकर्मी उसका चालान नहीं काटेगा, क्योंकि वह केवल चाह रहा है, उल्टी तरफ से गया नहीं है। जबकि अगर उसके मन में विचार उत्पन्न हो, और वह सचमुच गलत तरफ अपना वाहन ले जाए, तब कानून तोड़ने के जुर्म में फंसेगा। कहने का आशय यह कि सिर्फ चाहने या सोचने से किसी काम का हो जाना नहीं मान लिया जा सकता, जब तक कि वह वास्तव में घटित होता हुआ न दिखे।

वास्तव में, हर व्यक्ति में पूर्ण क्षमता है, चाहे तो वह कल्पना से भी ज्यादा नीचे गिर जाए और चाहे जितना भी ऊपर उठ जाए। मगर ऊपर उठने में चढ़ाई है और चढ़ाई में मेहनत लगती है। साथ ही चढ़ाई मेहनत के साथ सब्र मांगती है। चूंकि नीचे उतरने में ढलान है, बिना श्रम, जल्दी और आसानी से नीचे आ सकते हैं। इसलिए ज्यादातर व्यक्ति कानून तोड़ने का आसान रास्ता अपनाते हैं। इसके अलावा, नीचे उतरना हमेशा आसान लगता है। यों भी, भीड़ के पीछे चलना आसान है, क्योंकि वहां अपना दिमाग नहीं लगाना पड़ता। व्यक्ति जो भी आज है- अपने विचारों, भावों और कर्मों का जोड़ है। हर किसी का चरित्र अतीत की पूरी श्रृंखला से बनता और बिगड़ता है। इसीलिए पहली गलती पर अमूमन माफ कर दिया जाता है, लेकिन एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी, चौथी और गलतियों की पूरी एक श्रृंखला बन जाने के बाद माफी की गुंजाइश जाती रहती है।

आजकल के आधुनिक युग में बच्चों पर भी पढ़ाई का बोझ बढ़ता जा रहा है जिससे वे भी मानसिक तनाव का शिकार हो रहे हैं। बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं। वे अपनी भावनाओं और अनुभवों को आसानी से व्यक्त नहीं कर पाते। खासकर जब वे दुख, डर या असहज महसूस करते हैं तो वे इसे साफ शब्दों में नहीं बता पाते। इसका कारण यह है कि कई बार बच्चे मानसिक तनाव या डिप्रेशन की स्थिति में पहुंच सकते हैं।

पढ़ाई के बोझ के कारण बच्चों को हो रहा मानसिक तनाव

लक्षण

मानसिक तनाव के कारण बच्चों के व्यवहार में कई तरह के बदलाव दिखाई देते हैं। जब बच्चे परेशान होते हैं तो वे चिड़चिड़े हो सकते हैं या चुप्पी साध सकते हैं। यह बदलाव अचानक आ सकता है। एक बच्चा जो हमेशा समय पर खाना खाता था, अचानक खाना खाने से मना कर सकता है। या वह खेल जिसमें वह रुचि रखता था, उसमें अब उसका मन नहीं लगेगा। ऐसे व्यवहार को केवल नखरे समझना सही नहीं है। यह मानसिक तनाव का संकेत हो सकता है।

स्वभाव में बदलाव

अगर कोई बच्चा पहले बहुत मिलनसार था और हर किसी से बात करता था, लेकिन अचानक वह चुप हो जाए या किसी से बात करना बंद कर दे, तो यह चिंता का विषय हो सकता है। इसके विपरीत, यदि कोई बच्चा जो पहले शांत रहता था, अचानक बहुत ज़्यादा बोलने लगे, तो यह भी मानसिक दबाव का संकेत हो सकता है।

इस प्रकार करें सहायता

माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों की भावनाओं और मानसिक स्थिति पर ध्यान दें। बच्चों के दोस्तों को जानना जरूरी है। न तो बच्चों के दोस्तों को लेकर ज्यादा टोकाटाकी करें और न ही हर बात में हस्तक्षेप। बस यह जानने की कोशिश करें कि आपके बच्चे किन दोस्तों के साथ समय बिताते हैं। समय-समय पर बच्चों के दोस्तों को घर बुलाएं। इससे आपको पता चलेगा कि वे किस प्रकार के प्रभाव में हैं और क्या उनके दोस्त उनके लिए सकारात्मक हैं।

बच्चों से बात करें

घर पर खाली समय में, खासकर डिनर के दौरान बच्चों से बात करें। यह समय बहुत उपयोगी होता है जब माता-पिता अपने दिन की बातें बच्चों से साझा करते हैं। इससे बच्चे सीखते हैं कि अपनी बातें कैसे बताई जाती हैं और भावनाओं को कैसे व्यक्त किया जाता है।

बच्चों की बात ध्यान से सुनें

जब बच्चा अपनी कोई बात बताने आए, तो उसे पूरा ध्यान देकर सुनें। तुरंत प्रतिक्रिया न दें। यदि उसने कोई गलती की है, तो उस पर चिल्लाने की बजाय शांत और समझदार भाषा में बात करें। आवाज़ का स्वर नरम और सहयोगी होना चाहिए। इससे बच्चे को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का मौका मिलता है, जिससे वह मानसिक रूप से मजबूत बनता है।

बच्चे में तनाव का क्या कारण है?

मां-बाप का बच्चों को समय ना दे पाना : नौकरी तथा अन्य कार्यों के चलते मां बाप बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसीलिए अपने बच्चे के लिए हमेशा समय निकालें उसे पिकनिक डिनर या फिल्म दिखाने ले जाएं।

पढ़ाई का तनाव

आजकल की पढ़ाई लिखाई का बोझ बच्चों के मन पर तनाव पैदा कर रही है। उनका होमवर्क ना होना पढ़ाई में कम नंबर आना तथा क्लास में पीछे रह जाना इन सभी कारणों से मां-बाप तथा स्कूल में टीचर बच्चों को डांटते हैं।

इससे बच्चों पर भावनात्मक दबाव पड़ता है। माता पिता तथा अध्यापक हमेशा ही बच्चों पर अधिक नंबर लाने तथा कक्षा में प्रथम आने को कहते हैं हैं जिससे उनका कॉन्फिडेंस लेवल बहुत कम हो जाता है।

खेलकूद ना करना

भविष्य की चिंता या पढ़ाई का तनाव बच्चों में इतना रहता है कि उनके पास खेलना तो दूर खाने-पीने का भी समय नहीं होता है। आपको उसको मोबाइल कंप्यूटर की बजाय आउटडोर गेम्स खेलने के लिए प्रेरित करना चाहिए उसके साथ समय बिताएं।

माँ बाप का तनाव में रहना

अगर आपके चेहरे पर बहुत ज्यादा तनाव है तो इसका असर आपके बच्चों के दिमाग पर भी पड़ सकता है। आजकल बच्चों में यह समस्या बहुत बड़े पैमाने पर देखने को मिल रही है। बच्चों में तनाव का सबसे बड़ा कारण हायर स्टडीज, सोशल साइट्स और खुद आप पर बोझ है।

अच्छा

डिप्रेशन क्या है

यह एक प्रकार का साइकॉटिक डिसऑर्डर है जिसमें 2 सप्ताह या उससे अधिक समय तक के लिए उदासी रहती है। बच्चे को हमेशा नकारात्मक विचार आते हैं और उसका मन किसी भी काम में नहीं लगता है। उसकी रोजमर्रा की जिंदगी अस्त व्यस्त हो जाती है।

वातावरण ना होना

बच्चों के मन पर घर के वातावरण का प्रभाव हमेशा रहता है और उनके विचारों को प्रभावित करता है। जहां पति-पत्नी काम करते हैं, वे अपने बच्चों को बहुत कम समय समर्पित कर सकते हैं । जो आपके बेटे में अलगाव लाता है और उसे तनाव में रखता है। अक्सर तनावग्रस्त बच्चे दोस्तों से दूर बैठे नजर आएंगे। कुछ बच्चे डर के मारे अपने नाखून चबाने लगते हैं। इसलिए आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

माँ बाप की लडाई

माता-पिता इस बात को भूल जाते हैं कि बहस करने और गाली देने की उनकी गलती बच्चों के लिए जीवन भर दुख बन जाती है । इन्हीं बातों की वजह से बच्चों में डर बस जाता है। ऐसे माहौल में आपके बच्चे का बचपन खत्म हो जाता है। कभी भी अपने बच्चे को ऐसा माहौल न दें।

बच्चे को हतोत्साहित करना

यदि आप बच्चे को किसी भी परीक्षा में सफलता नहीं मिलती है, तो कभी उसे डांटें या उस पर दबाव न डालें। इससे आपका बच्चा तनाव में आ जाएगा। आपको अपने बच्चे को यह समझने की जरूरत है कि यह जीवन का अंत नहीं है, यह एक नई शुरुआत है। कभी कभी बच्चा मानसिक तनाव से इतना घिरा जाता है कि उसे कुछ भी महसूस नहीं होता। वह धीरे-धीरे पढ़ाई में कमजोर हो जाता है। यह बात उसके दिमाग में बैठ जाती है कि वह अब कुछ नहीं कर सकता। अक्सर बच्चे दूसरे लोगों की तारीफें सुनकर चिढ़ जाते हैं। उनकी आत्म प्रशंसा से उनको ठेस पहुंचती है। अगर कोई उनका हौसला नहीं बढ़ाता तो वे हमेशा के लिए निराश हो जाते हैं। इसलिए आपको समय-समय पर अपने बच्चे की प्रशंसा और उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

बच्चे में तनाव के क्या लक्षण है

व्यवहार में परिवर्तन

जब शिशु तनाव में होता है, तो सबसे पहले जो चीज प्रभावित होती है, वह है उसका व्यवहार। बार-बार परेशान होना, अक्सर दुखी रहना, घंटों रोना, ये बच्चों में पाए जाने वाले तनाव के लक्षण हैं।

बिस्तर गीला करना

छोटे बच्चे कभी-कभी अपनी नींद में बिस्तर गीला कर देते हैं, लेकिन वे 3-4 साल की उम्र से ऐसा करना बंद कर देते हैं।

पसंदीदा सामान से दूरी

यदि आपका बच्चा अपने पसंदीदा खिलौने से नहीं खेलता है और अपनी पसंदीदा डिश नहीं खाता है, तो वह तनाव में हो सकता है।

स्कूल से लगातार शिकायत

स्कूल से शिकायतें मिलना सामान्य बात है। लेकिन अगर यह हर दूसरे दिन आपके पास आता है, तो कुछ गलत हो सकता है।

नाखून चबाना

बच्चे अपने नाखूनों को तब चबाते हैं जब वे बहुत अधिक चिंता करते हैं या गुस्सा करते हैं।

खाने और सोने में बदलाव

यदि बच्चा चिंतित है, तो उसके खाने की आदतों में परिवर्तन होता है। अक्सर उदास बच्चे बहुत ज्यादा खाने या सपने देखने लगते हैं।

बच्चो को तनावमुक्त कैसे रखे

डॉक्टर आपके बच्चे के साथ समय बिताने की सलाह देते हैं। उनकी अच्छी दिनचर्या बनाएं और उन्हें व्यस्त रखें। अपने बच्चों को हर शाम व्यायाम करवाएं। सूर्यास्त के समय अपने घर के बगीचे या छत पर टहलें। यदि आप गर्म क्षेत्रों में हैं, तो सोने से पहले स्नान करें। इससे नींद अच्छी आएगी।

अपने बच्चे के व्यवहार पर ध्यान दें। यदि आपको लगता है कि आपका बच्चा इन दिनों अलग तरह से काम करता है, तो उसकी भावनाओं पर विचार करें, और उसके साथ अधिक समय बिताएं। अगर आपका बच्चा इन सब के बाद भी दुखी है, तो बाल रोग विशेषज्ञ को बुलाएं।

घंटों पीछे भागने के बाद भी नहीं खाता बच्चा? काम आएंगे ये स्मार्ट पैरेंटिंग टिप्स

खाने के समय नखरे करना बच्चों की आम समस्या है. कई माता-पिता इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि उनका बच्चा ठीक से नहीं खाता तो उसे जरूरी पोषक तत्व कैसे मिलेंगे. भागदौड़ भरी जिंदगी में बच्चे का खान-पान सही रखना चुनौती भरा काम है लेकिन चिंता करने की जरूरत नहीं है. विशेषज्ञों के अनुसार सही तरीके और धैर्य से इस समस्या को आसानी से सुलझाया जा सकता है.

यूनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस इमरजेंसी फंड (यूनिसेफ) बताता है कि छोटे बच्चों का स्वाद और पसंद हर दिन बदलती रहती है. दुनियाभर के माता-पिता इस समस्या से जूझ रहे हैं. अगर आपका बच्चा भी खाने में नखरे करता है तो सात आसान और प्रभावी टिप्स को अपनाकर आप उसे स्वस्थ और पौष्टिक भोजन की ओर प्रेरित कर सकते हैं. ये टिप्स अपनाकर माता-पिता अपने बच्चे को स्वस्थ खान-पान की आदत डाल सकते हैं. धैर्य और सकारात्मक रवैया सबसे जरूरी है.

बार-बार कोशिश करें

नया खाना बच्चे को तुरंत पसंद नहीं आता. किसी नए खाद्य पदार्थ को पसंद करने में उसे 10 बार से ज्यादा चखना पड़ सकता है. हार न मानें, थोड़ी मात्रा में नए खाने को बार-बार दें. जिस चीज को बच्चा नहीं खाता, उसे पसंद की चीज के साथ मिलाकर दें.

अलग-अलग तरह का पौष्टिक खाना दें

बच्चे को रोजाना फल, सब्जियां, अनाज, दालें, डेयरी उत्पाद, मेवे और बीज खिलाएं. अलग-अलग रंग, स्वाद और बनावट वाले खाने दें. एक ही सब्जी को कच्चा और पका दोनों रूप में ट्राई करें. विविधता बच्चे को आकर्षित करती है.

बच्चे को टीम का हिस्सा बनाएं

बच्चे को बाजार ले जाएं और उन्हें फल-सब्जी चुनने दें. घर पर उनकी उम्र के अनुसार छोटा काम सौंपें जैसे सामग्री मिलाना या प्लेट सजाना. जब बच्चा खुद खाना बनाने में शामिल होता है तो उसे खाने का ज्यादा उत्साह होता है.

उनकी भूख पर भरोसा करें

बच्चे को खाने के लिए मजबूर न करें. अगर वह कम खा रहा है तो दबाव न डालें. जब तक बच्चा स्वस्थ है, फुर्तीला है और वजन ठीक बढ़ रहा है, तो चिंता न करें. बच्चे को अपनी भूख-तृप्ति के संकेत समझने दें.

कम मात्रा में खाना दें

छोटे बच्चों का पेट बहुत छोटा होता है. उन्हें बड़ी मात्रा में खाना न दें. उनकी उम्र के हिसाब से छोटी-छोटी सर्विंग दें और थोड़ा खाने पर भी तारीफ करें.

खाने को इनाम या सजा न बनाएं

अच्छे व्यवहार के लिए मिठाई या जंक फूड का लालच न दें. इससे बच्चे अच्छे-बुरे खाने की गलत सोच विकसित करते हैं. इसके बजाय खेलने या घुमने का वादा करें.

खुद रोल मॉडल बनें

बच्चे अपने माता-पिता की नकल करते हैं. परिवार के साथ बैठकर पौष्टिक भोजन करें और उसे स्वादिष्ट बताएं. जब बच्चा देखेगा कि आप भी वही खा रहे हैं तो वह खुद इसे ट्राई करना चाहेगा.

बच्चों को इस प्रकार बतायें अक्षर का देश से संबंध

अभिभावक अपने बच्चों को इस बात की जानकारी दें कि ए से जेड तक हर अंग्रेज़ी अक्षर से कोई न कोई देश शुरू होता हैं। दुनिया में कुल मिलाकर लगभग 195 देश हैं। हर देश का नाम अपने इतिहास, संस्कृति और भौगोलिक पहचान से जुड़ा होता है।

ए- ऑस्ट्रेलिया : यह कंगारुओं, क्रिकेट और खूबसूरत बीचों का देश है। यहां का सिडनी ओपेरा हाउस और ग्रेट बैरियर रीफ दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।

बी – ब्राजील : यह देश फुटबॉल के जुनून, अमेजन जंगल और रियो डी जनेरियो के कार्निवल के लिए जाना जाता है।

सी- कनाडा : यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है, जो अपनी बर्फीली झीलों और शांत जीवनशैली के लिए मशहूर है।

डी – डेनमार्क : यह यूरोप के सबसे खुशहाल देशों में से एक है, जहां स्वच्छता और जीवन की गुणवत्ता सबसे बेहतरीन मानी जाती है।

ई – मिस्र : यह देश पिरामिड, दुनिया की सबसे लंबी नील नदी और फैरोस की रहस्यमयी सभ्यता का प्रतीक है.

एफ – (फ्रांस) : यह प्यार, फैशन और एफिल टॉवर का देश है, जहां हर साल लाखों पर्यटक आते हैं।

जी – जर्मनी : यह देश इंजीनियरिंग और ऑटोमोबाइल के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है. वहीं, बर्लिन की ऐतिहासिक दीवार इसकी पहचान है.

एच – हंगरी हंगरी : यह यूरोप का एक सुंदर देश है, जिसकी राजधानी बुडापेस्ट अपनी नदी और पुलों के लिए जानी जाती है।

आई –भारत : भारतअपनी संस्कृति, परंपरा और विविधता से भरा है, जहां हर 100 किलोमीटर पर भाषा और खानपान बदल जाता है।

जे – (जापान यह देश टेक्नोलॉजी, अनुशासन और सुशी के लिए मशहूर है। यहां की 'बुलेट ट्रेन' और 'चेरी ब्लॉसम' दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

के – केन्या अफ्रीका का यह देश, अपनी वाइल्डलाइफ सफारी और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है.

एल – लाओस यह देश शांत, आध्यात्मिक और हरियाली से भरपूर दक्षिण-पूर्व एशिया का काफी सुंदर देश है।

एम – मेक्सिको इसे टाकोस, म्यूजिक और रंगीन त्योहारों का देश कहा जाता है, जिसकी संस्कृति बेहद जीवंत है.

एन (नेपाल) दुनिया का सबसे ऊंचा पर्वत 'माउंट एवरेस्ट' यहीं मौजूद है। यहां की शांति और हिमालयी सौंदर्य दुनिया को आकर्षित करती है.

ओ – ओमान : यह अरब देशों में सबसे शांतिपूर्ण और विकसित देश है, जिसकी परंपरा और अतिथि सत्कार अद्भुत है.

पी (पुर्तगाल) : यह देश अपने समुद्र तटों, ऐतिहासिक इमारतों और फुटबॉल के लिए मशहूर है.

क्यू – कतर यह काफी तेजी से विकसित होता देश है, जिसने 2022 का फीफा वर्ल्ड कप भी आयोजित किया था।

आ – रूस : यह दुनिया का सबसे बड़ा देश है, जो यूरोप और एशिया महाद्वीप – दोनों में फैला हुआ है है.

एस –स्पेन यह देश फ्लैमिंगो डांस, टोमाटीना फेस्टिवल, बुल फाइटिंग, स्वादिष्ट खाना और फुटबॉल के जुनून के लिए जाना जाता है।

टी- तुर्की यह देश एशिया और यूरोप के संगम पर स्थित है। यह देश अपनी मस्जिदों और ऐतिहासिक बाजारों के लिए भी जाना जाता है।

यू- युगांडा : इसे अफ्रीका का 'मोती' कहा जाता है, जहां प्राकृतिक सुंदरता और जीव-जंतुओं की विविधता देखने लायक है।

वी – यह देश युद्ध के इतिहास और हरे-भरे नजारों वाला देश है, जो अब पर्यटन के लिए तेजी से विकसित हो रहा है।

डब्लयू – वेल्स (वेल्स) : यह देश यूनाइटेड किंगडम का हिस्सा है, जहां किले, पहाड़ और संगीत संस्कृति का अहम स्थान है।

एक्स – इस अक्षर से कोई देश नहीं है।

वाय – यमन : यह देश दुनिया के नक्शे में मिडिल ईस्ट में मौजूद है, जिसकी ऐतिहासिक इमारतें और पुरानी सभ्यता बहुत प्रसिद्ध हैं.

जेड – जाम्बियायह भी अफ्रीका महाद्वीप का एक सुंदर देश है, जहां का शानदार विक्टोरिया फॉल्स दुनिया भर के टूरिस्ट्स को आकर्षित करता है।

पुष्कर चिंतन शिविर : राहुल गांधी ने थपथपाई डोटासरा-जूली की पीठ, कार्यकर्ताओं में भरा नया जोश

पुष्कर में 10 दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन एवं प्रशिक्षण शिविर का समापन, कांग्रेस जिलाध्यक्षों के परिवार से मिले

लोक टूडे। जयपुर

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सोमवार को राजस्थान के पुष्कर पहुंचे, जहां उन्होंने कांग्रेस के 10 दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन एवं प्रशिक्षण शिविर के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने एक विशेष सत्र में राजस्थान के 50 और दिल्ली के 15 (कुल 65) जिला अध्यक्षों सहित दोनों प्रदेशों के शीर्ष पदाधिकारियों को संबोधित किया और उन्हें संगठन मजबूती का विशेष 'ट्रेनिंग मंत्र' दिया। यह 10 दिवसीय शिविर अजमेर जिले के धार्मिक स्थल पुष्कर के तिलोरा स्थित वाइल्ड रोज रिसॉर्ट में आयोजित किया गया था। शिविर का मुख्य उद्देश्य कांग्रेस संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना, आगामी चुनावों के लिए राजनीतिक रणनीतियों पर मंथन करना, कार्यकर्ताओं के साथ संवाद बढ़ाना और पार्टी की नीतियों को जन-जन

तक पहुंचाना था। इस प्रशिक्षण शिविर में मुख्य रूप से राजस्थान के 50 और दिल्ली के 15 जिला कांग्रेस अध्यक्षों ने भाग लिया, जिन्हें एक हफ्ते से अधिक समय तक संगठनात्मक मजबूती का प्रशिक्षण दिया गया।

पदाधिकारियों के साथ सीधा संवाद -

राहुल गांधी ने समापन सत्र में जिला अध्यक्षों और पदाधिकारियों के साथ सीधा संवाद किया और भविष्य का रोडमैप पेश किया। उन्होंने 'संगठन सृजन अभियान' और पार्टी की मूल विचारधारा पर चर्चा की। राहुल गांधी ने जिला अध्यक्षों को निर्देश दिया कि वे जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनें और पार्टी की पकड़ को जमीनी स्तर पर और मजबूत करें।

थपथपाई नेताओं की पीठ -

इस दौरान राहुल गांधी ने राजस्थान कांग्रेस के नेतृत्व (प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली) के आपसी तालमेल की जमकर तारीफ की और कहा कि उनकी जोड़ी दूसरे राज्यों के लिए एक मिसाल है। यह दूसरे राज्यों के लिए भी उदाहरण है। यह बात उन्होंने सोमवार को अजमेर के किशनगढ़ एयरपोर्ट पर स्वागत के दौरान कही। उन्होंने स्पष्ट संकेत दिया कि कांग्रेस आने वाले समय में कार्यकर्ताओं और शीर्ष नेतृत्व के बीच के समन्वय को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाएगी।

विधायक ने राहुल को भेंट किया हल -

इससे पहले, राहुल सोमवार सुबह 10:05 बजे किशनगढ़ एयरपोर्ट पहुंचे। पूर्व सीएम अशोक गहलोत, कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा और पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट उनका स्वागत करने एयरपोर्ट पहुंचे। किशनगढ़ विधायक विकास चौधरी ने राहुल गांधी को हल भेंट किया। यहां से राहुल पुष्कर के लिए रवाना हो गए।

मंत्री दक के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन, मंत्री तेरी कब्र खुदेगी, आज नहीं तो कल खुदेगी... के लगे नारे

लोक टूडे। जयपुर

मंत्री तेरी कब्र खुदेगी, आज नहीं तो कल खुदेगी..., मंत्री तेरी तानाशाही नहीं चलेगी... और राजस्थान पुलिस जिंदाबाद... जैसे नारों के साथ सोमवार को जयपुर में सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों और जवानों ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों में सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक के खिलाफ भारी नाराजगी देखने को मिली। उनका आरोप है कि मंत्री ने चित्तौड़गढ़ जिले के डूंगला थाने में पुलिसकर्मियों के साथ अभद्र व्यवहार किया और अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल कर पूरे पुलिस महकमे का अपमान किया है। राजस्थान सेवानिवृत्त पुलिस कल्याण संस्थान के नेतृत्व में बड़ी संख्या में पूर्व पुलिसकर्मी जयपुर कलेक्ट्रेट पहुंचे और विरोध प्रदर्शन किया। करीब डेढ़ घंटे तक नारेबाजी और प्रदर्शन के बाद प्रतिनिधिमंडल जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचा, जहां राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक को तत्काल मंत्रिमंडल से हटाने तथा उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने की मांग की गई। संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष रिछपाल

सिंह पूनिया ने कहा कि पुलिस संविधान और कानून के दायरे में रहकर दिन-रात जनता की सेवा करती है। ऐसे में किसी मंत्री द्वारा थाने में जाकर पुलिसकर्मियों के साथ अशोभनीय भाषा का प्रयोग करना न केवल पुलिस बल का अपमान है बल्कि संविधान की भावना के भी खिलाफ है। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाएं पुलिसकर्मियों का मनोबल तोड़ने का काम करती हैं और सरकार को इस मामले को गंभीरता से लेना चाहिए। प्रदर्शन कर रहे सेवानिवृत्त जवानों ने कहा कि पुलिस हर परिस्थिति में जनता की सुरक्षा के लिए तैयार रहती है। आपदा हो, अपराध हो या कानून-व्यवस्था की चुनौती, पुलिस सबसे पहले मौके पर पहुंचती है। ऐसे में पुलिसकर्मियों के साथ सार्वजनिक रूप से दुर्व्यवहार करना पूरे बल का अपमान है। उन्होंने कहा कि सेवारत पुलिसकर्मियों का कोई संगठन नहीं होने के कारण वे खुलकर विरोध नहीं जता सकते, इसलिए सेवानिवृत्त जवान उनकी आवाज बनकर सामने आए हैं।

चेतावनी : कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन होगा व्यापक -

सेवानिवृत्त पुलिसकर्मियों ने सरकार को स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि मंत्री के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन को और व्यापक बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि फिलहाल यह विरोध जिला स्तर पर किया जा रहा है, लेकिन मांगें नहीं मानी गईं तो प्रदेशभर के सेवानिवृत्त पुलिसकर्मियों को एकजुट कर राजस्थान स्तर पर बड़ा आंदोलन शुरू किया जाएगा। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यह लड़ाई किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि पुलिस बल के सम्मान और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए लड़ी जा रही है।

250 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज खंगालकर दो बदमाशों को पकड़ा:सूने मकान का ताला तोड़ घुसे,1.50 लाख की नकदी समेत जेवर चोरी कर ले गए थे

जयपुर

जयपुर की नाहरगढ़ थाना पुलिस ने माउंट रोड स्थित एक सूने मकान में हुई चोरी का खुलासा करते हुए दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने मकान सूना मिलने पर ताला तोड़कर डेढ़ लाख रुपए की नकदी सहित लाखों रुपए के सोने-चांदी के आभूषण और कीमती सामान चोरी कर लिया था।

पुलिस ने चोरी की घटना के बाद करीब 250 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालकर दोनों आरोपियों तक पहुंच बनाई और चोरी किए गए सोने के आभूषण और चांदी के बर्तन बरामद कर लिए। फिलहाल पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ में जुट गई है।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान कासिफ खां (19) निवासी टोंक रिसाला बस्ती, जालूपुरा जयपुर और ऐजास उर्फ मोटा (24) निवासी टोंक, हाल निवासी शिवपुरी (मध्यप्रदेश) के रूप में हुई है।

चोरों ने मकान का ताला तोड़ उड़ाए थे नकदी समेत जेवर

डीसीपी नॉर्थ करण शर्मा ने बताया कि 14 मई को माउंट रोड निवासी पीड़ित ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि परिवार के सदस्य की गंभीर बीमारी और निधन के कारण घर बंद था। इस दौरान अज्ञात चोरों ने मकान का ताला तोड़कर अलमारी और तिजोरी से 1.50 लाख रुपए नकद सहित बड़ी मात्रा में सोने-चांदी के आभूषण चोरी कर लिए। मामले में नाहरगढ़ पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई।

शातिर के खिलाफ पहले भी कई गंभीर मामले दर्ज

डीसीपी नॉर्थ करण शर्मा ने बताया कि पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी की गई सोने की चेन, सोने की अंगूठी और चांदी की थाली, कटोरी, बगड़ी, लेडीज ब्रेसलेट, चांदी का नारियल और 40 घुंघरू बरामद किए हैं।

जांच में सामने आया कि ऐजास उर्फ मोटा एक शातिर नकबजन है, जिसके खिलाफ पूर्व में भी चोरी, नकबजनी, लूट और पॉक्सो एक्ट सहित कई गंभीर मामले दर्ज हैं। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर अन्य वारदातों के संबंध में भी जानकारी जुटा रही है।

पेपरलीक सरगना तुलछाराम की अंतरिम जमानत खारिज

भाई के वेंटिलेटर पर होने का हवाला देकर मांगी थी जमानत, जेजेएम में 4 की खारिज, 1 को मिली जमानत

जयपुर

ब्लूटूथ के जरिए नकल कराने वाले सरगना तुलछाराम कालेर की 15 दिन की अंतरिम जमानत याचिका को खारिज हो गई हैं। जयपुर महानगर द्वितीय की एडीजे-1 कोर्ट ने आरोपी की याचिका को खारिज कर दिया। जज विनोद कुमार गुप्ता-द्वितीय ने कहा कि मामले की गंभीरता और आरोपी के आपराधिक इतिहास को देखते हुए उसे किसी भी प्रकार की राहत नहीं दी जा सकती हैं। सुनवाई के दौरान अदालत में आरोपी तुलछाराम के वकील ने कहा कि वह पिछले दो सालों से जेल में है। उसके बड़े भाई बीकानेर के एक अस्पताल में वेंटिलेटर पर हैं और भाई की देखभाल के लिए उसे 15 दिन की अंतरिम जमानत दी जाए।

वहीं मामले में स्पेशल पीपी भंवर सिंह चौहान ने जमानत का विरोध करते हुए कहा कि रिकॉर्ड के अनुसार, आरोपी तुलछाराम के खिलाफ अजमेर, बीकानेर, सीकर और जयपुर के अलग-अलग थानों में पेपरलीक, धोखाधड़ी और आईटी एक्ट के कुल 14 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। ऐसे संगठित नकल गिरोह के मुख्य सूत्रधार को अंतरिम जमानत देना किसी भी दृष्टि से न्यायोचित नहीं है।

जेजेएम में 4 की जमानत खारिज, एक को मिली

वहीं, दूसरी ओर आज राजस्थान हाईकोर्ट ने जल जीवन मिशन (जेजेएम) टेंडर घोटाला मामले में जेल में बंद चार अधिकारियों की जमानत याचिकाएं खारिज कर दी हैं। हालांकि, इसी मामले के एक अन्य आरोपी अरुण श्रीवास्तव को स्वास्थ्य कारणों के आधार पर सशर्त जमानत मिल गई है। जस्टिस रवि चिरानिया की एकलपीठ ने तत्कालीन सचिव (राजस्थान वाटर सप्लाई एंड सीवरेज मैनेजमेंट बोर्ड) शुभांशु दीक्षित, तत्कालीन अधीक्षण अभियंता निरिल कुमार, तत्कालीन मुख्य लेखाधिकारी एवं वित्तीय सलाहकार सुशील शर्मा तथा तत्कालीन मुख्य अभियंता (स्पेशल प्रोजेक्ट्स) दिनेश गोयल की नियमित जमानत याचिकाएं खारिज की हैं। अदालत ने 27 मई को सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में टिप्पणी करते हुए कहा कि संबंधित अधिकारी टेंडर प्रक्रिया से जुड़ी विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य थे और पूरी प्रक्रिया में उनकी भूमिका बेहद अहम रही है। निविदाओं के संबंध में गंभीर शिकायतें मिलने के बावजूद प्रक्रिया को जानबूझकर आगे बढ़ाया गया। जिससे प्रथम दृष्टया (पहली नज़र में) गंभीर वित्तीय अनियमितताओं के आरोप प्रमाणित होते हैं। एसीबी द्वारा कोर्ट में पेश की गई चार्जशीट ही लगभग 16 हजार पेज की है, जो महज सात टेंडरों की जांच से संबंधित है, जबकि कुल 104 टेंडरों की व्यापक जांच अभी लंबित है। ऐसे में जांच के इस चरण पर आरोपियों को जमानत देना न्यायोचित नहीं होगा।

तीन महीने में तीसरी बार पीएम से मिले सीएम भजनलाल: सरकार के कामकाज का दिया ब्यौरा, राज्यसभा चुनाव और मंत्रिमण्डल फेरबदल पर भी चर्चा

जयपुर

सीएम भजनलाल शर्मा ने सोमवार को दिल्ली में पीएम नरेंद्र मोदी से मिले। लोक कल्याण मार्ग स्थित पीएम आवास में दोनों नेताओं की मुलाकात हुई। इस समय सीएम की पीएम से मुलाकात के मायने भी निकाले जा रहे हैं।

दरअसल, आज ही करीब ढाई साल बाद केन्द्रीय नेतृत्व ने राजस्थान में संगठन महामंत्री की नियुक्ति की है। वहीं, एक-दो दिन में राज्यसभा चुनावों की सीटों पर प्रत्याशी की घोषणा भी होनी है। इसके साथ लंबे समय से प्रदेश में मंत्रिमण्डल फेरबदल भी लंबित चल रहा है।

ऐसे में माना जा रहा है कि सीएम की सरकार के कामकाज के ब्यौरे के साथ पीएम के साथ राज्यसभा चुनाव और मंत्रिमंडल फेरबदल को लेकर भी चर्चा हुई है।

सीएम भजनलाल की पीएम मोदी से तीन महीने में यह तीसरी मुलाकात हैं। इससे पहले सीएम ने 25 मार्च को संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। वहीं, उससे करीब एक माह पहले 28 फरवरी को पीएम मोदी अजमेर दौरे पर आए थे। उस समय भी सीएम की पीएम से मुलाकात हुई थी।

एक-दो दिन में राज्यसभा प्रत्याशियों की घोषणा

सीएम भजनलाल शर्मा की सोमवार को पीएम मोदी से मुलाकात इस मायने में भी खास हो जाती है कि आने वाले एक-दो दिनों में पार्टी राज्यसभा चुनाव के लिए प्रत्याशियों की घोषणा कर सकती है। ऐसे में संभावित उम्मीदवारों के नामों को लेकर भी पीएम मोदी ने सीएम भजनलाल शर्मा से फीडबैक लिया होगा।

प्रदेश में राज्यसभा की तीन सीटों पर चुनाव है। संख्या के गणित के हिसाब से पार्टी दो सीटों पर जीत सकती है। एक सीट पर केन्द्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू को फिर से रिपीट किया जा सकता है। वहीं, दूसरी सीट पर राजेन्द्र राठौड़, सतीश पूनिया, अलका गुर्जर में से किसी एक को टिकट मिलने की संभावना है। हालांकि उद्योगपति नरसी कुलहरी का नाम भी चर्चाओं में बना हुआ है।

अजीतपुरा-कुजाता में खूनी संघर्ष : धरनार्थियों पर ताबड़तोड़ फायरिंग और पथराव!

अवैध और नियम विरुद्ध खनन बंद करने को लेकर चल रहा था धरना, घटनाक्रम में 10 घायल, 3 जयपुर रेफर

लोक टूडे। कोटपूतली

कोटपूतली-बहरोड़ जिले के प्रागपुरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले अजीतपुरा-कुजोता गांव में सोमवार को उस समय भारी तनाव फैल गया, जब लंबे समय से धरना दे रहे ग्रामीणों पर अचानक दर्जनों बदमाशों ने जानलेवा हमला कर दिया। हमलावरों ने ग्रामीणों को निशाना बनाते हुए अंधाधुंध फायरिंग की और भारी पथराव किया। इस अचानक हुए हमले में महिलाओं सहित करीब 10 ग्रामीण गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। वारदात के बाद इलाके में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है और स्थिति तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में बताई जा रही है।

धरना स्थल पर अचानक पहुंचे बदमाश, मचाया तांडव -

स्थानीय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अजीतपुरा-कुजोता गांव में ग्रामीण पिछले काफी समय से क्षेत्र में चल रहे अवैध और प्रदूषणकारी खनन

कार्यों के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। बीच में यह धरना स्थगित हो गया था, जिसे ग्रामीणों ने हाल ही में दोबारा शुरू किया था। सोमवार को जब ग्रामीण धरना स्थल पर बैठे थे, तभी अचानक गाड़ियों में सवार होकर आए बदमाशों ने उन पर हमला बोल दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, हमलावरों ने लाठियों से मारपीट करने के साथ-साथ ग्रामीणों पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाईं और पथराव किया, जिससे मौके पर चीख-पुकार मच गई।

3 घायलों की हालत नाजुक, जयपुर रेफर -

इस खूनी संघर्ष में 10 से अधिक ग्रामीणों के सिर, हाथ-पैर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटें आई हैं। जिसमें से तीन को गंभीर हालत में जयपुर रेफर किया गया है। घायलों में मदन वर्मा (69), सुगनचंद (65), दशरथ (40), करिश्मा (16), महेंद्र (46), जगदीश (60) और कालू (60) शामिल हैं। वहीं विनय सिंह (26), दीपक (29) और कालू खान (65) को गंभीर हालत में जयपुर रेफर कर दिया गया है। अन्य घायलों का कोटपूतली में ही उपचार जारी है।

ग्रामीणों की मांग : अवैध खनन पर रोक और आरोपियों की तुरंत गिरफ्तारी-

घटना के विरोध में ग्रामीणों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों में भारी आक्रोश व्याप्त है। ग्रामीणों की मांग है कि अजीतपुरा-कुजोता की पहाड़ियों में चल रहे अवैध और नियम विरुद्ध खनन को पूरी तरह से बंद किया जाए। धरने पर बैठे निर्दोष ग्रामीणों पर जानलेवा हमला करने वाले मुख्य साजिशकर्ताओं और शूटरों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए। पीड़ित परिवारों को सुरक्षा मुहैया कराई जाए और घायलों को मुआवजा दिया जाए।

पुलिस की कार्रवाई : भारी जाब्ता तैनात, हमलावरों की तलाश शुरू -

वारदात की सूचना मिलते ही प्रागपुरा थाना पुलिस सहित जिला मुख्यालय से उच्च अधिकारी भारी पुलिस जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने तुरंत स्थिति को संभाला और धरना स्थल व अस्पताल के बाहर अतिरिक्त बल तैनात किया। कोटपूतली पुलिस प्रशासन का कहना है कि हमलावरों को बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस ने आरोपियों की धरपकड़ के लिए अलग-अलग टीमें गठित कर दी हैं और संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। इलाके में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल लगातार गश्त कर रहा है।

मौके से कारतूस के दो खोल मिले -

एसपी ने बताया- मौके पर पहुंची पुलिस की टीम ने कारतूस के दो खोल बरामद किए हैं। गोली लगने से कितने लोग घायल हुए हैं, इसकी पुष्टि रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगी। पुलिस की टीम आरोपियों की तालाश कर रही है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक - [illegible]